आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 5 बीकानेर, जनवरी, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

माननीय राज्यपाल के उद्‌गार

स्वावलम्बन और ग्राम समृद्धि पशुपालन से ही संभव

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों!

नूतन वर्ष 2016 का हार्दिक अभिनन्दन। नया वर्ष आपके लिए सुख–समृद्धि और स्वास्थ्यप्रद हो ऐसी मंगलकामनाएं करता हूँ। हमारा सौभाग्य है कि बीते वर्ष में माननीय राज्यपाल और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने तीन बार यहां पधारकर हमें अनुग्रहित किया है। माननीय कुलाधिपति ने 11 दिसम्बर, 2015 को इस परिसर में पशुपालकों और कृषकों से सीधे संवाद में जो भावनाएं इस विश्वविद्यालय के लिए प्रकट की हैं उन पर खरा उतरने का भार हम सभी के कंधों पर है। उनके कुशल नेतृत्व में हमने कुछ करने का प्रयास किया है। माननीय राज्यपाल महोदय के ये उद्‌गार कि ''पशुचिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करके इस वेटरनरी विश्वविद्यालय ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यह आगे बढ़कर भारत वर्ष का पहला विश्वविद्यालय बनेगा जहां पशुओं को आधुनिकतम चिकित्सा सुविधा मिलेगी। कृषि प्रधान देश भारत में पशुधन का विशेष महत्व है। उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं कि जिस देश के पास जितना सोना होता है वह देश उतना ही संपन्न होता है लेकिन उनकी मान्यता है कि जिस देश में अधिक पशुधन होता है वही संपन्न बन सकता है। पशुओं से दुग्ध का उत्पादन और पशु–पक्षियों के विकास से हमारे किसान का आर्थिक हित साधन हो सकता है। देश में जमीन ज्यादा है लेकिन खेती कम है ऐसे में किसान की आजीविका का साधन पशुधन और दूध का उत्पादन है।'' माननीय के इन वचनों की पालना में ही हमारी सफलता निहित है। वेटरनरी विश्वविद्यालय अपने शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार के कार्यक्रमों में इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है। अंतिम छोर तक बैठे कृषकों और पशुपालकों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए हम निरंतर कार्य कर रहे हैं। किसान और पशुपालकों का चहुँमुखी विकास हमारी प्राथमिकता है। इस मुहिम में आपका सहयोग और भरोसा हमारे लिए महत्वपूर्ण है। पशुओं की चिकित्सा, प्रजनन, पोषण और प्रसार करने के लिए हम संकल्पबद्ध हैं लेकिन इन सबको व्यवहार में अपनाने का जिम्मा आपका है। आपके सक्रिय सहयोग के बिना ऐसा संभव नहीं हो सकता। आईये, हम सब मिलजुलकर राजस्थान को पशुपालन का सिरमौर बनाने के लिए प्रण–प्राण से जुट जाएं। क्योंकि यही हमारे ग्राम स्वराज और स्वावलम्बन का सपना पूरा कर पायेंगे।

जयहिन्द।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

सभी पाठकों और पशुपालक भाईयों को नूतन वर्ष–2016 की हार्दिक शुभकामनाएँ

मुख्य समाचार

सर्वाधिक पशुधन संपदा वाला राष्ट्र ही सम्पन्न- राज्यपाल कल्याण सिंह

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने कहा है कि पशुचिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करके वेटरनरी विश्वविद्यालय ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यह आगे बढ़कर भारत वर्ष का पहला विश्वविद्यालय बनेगा जहां पशुओं को आधुनिकतम चिकित्सा सुविधा मिलेगी। उन्होंने राजुवास के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत के नेतृत्व में किए जा रहे कार्यों को सराहा। राज्यपाल 16 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में "पशुपालकों से संवाद" कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व कुलाधिपति ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में वर्षा जल संग्रहण तंत्र से सिंचाई कार्य का उद्घाटन किया और देश में अपनी किस्म के पहले सजीव पशु जैव विविधता म्यूजियम का अवलोकन किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स में आधुनिक सुविधाओं से युक्त नवीकृत पशुपालक विश्रामगृह का लोकार्पण भी किया। विश्रामगृह में आधुनिक सुविधाएं प्रदान कर इनडक्शन हीटर, गीजर, वाटर कूलर, और शैय्याओं को सुसज्जित करके पशुपालकों के आवास को आरामदायक बनाया गया है। राज्यपाल ने कहा कि यहां कृषक और पशुपालकों द्वारा जो समस्याएं रखी गई हैं उनका समाधान राज्य सरकार के स्तर पर करवाए जाने का प्रयास करेंगें। संवाद कार्यक्रम में उपस्थित एक दर्जन से भी अधिक पशुपालकों ने राज्यपाल के सम्मुख गर्मियों में चारे की किल्लत, ईंट भट्टों में चारे की बर्बादी को रोकने और पशु बीमा करने की गुहार की। पशुपालकों ने बीमार पशुओं के परिवहन के लिए एम्बूलैंस सुविधा, पशु चिकित्सालयों में टीकाकरण व अन्य पशु चिकित्सा सेवाओं को दुरूस्त किए जाने की मांग की। पशुपालकों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के क्लिनिक्स में पशु उपचार सेवाओं की मुक्त कंठ से सराहना भी की। गौपालक नवीन सिंह, मोहम्मद इंसाफ गुर्जर, गोकुलराम बिश्नोई, गुर इकबाल सिंह भुल्लर, आनन्द बोहरा, श्री श्रीगोपाल उपाध्याय, कन्हैयालाल रंगा, गोविन्द सिंह जोधासर, सुमेर सिंह, बाबूलाल खत्री सहित अन्य पशुपालकों ने संवाद कार्यक्रम में शिरकत की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विश्वविद्यालय में स्थापित सजीव जैव विविधता म्यूजियम देश में अनूठा और पहला है जिससे हम गर्व महसूस करते हैं। इसका उपयोग स्कूल–महाविद्यालय छात्र–छात्राओं और पशुपालकों को प्रेरित करने के लिए किया जाएगा। विश्वविद्यालय के तीनों क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स में आधुनिक चिकित्सा सेवाएं चौबीसों घंटे सुलभ करवाई जा रही हैं। राज्यपाल के समक्ष राजुवास द्वारा राज्य भर में दी जा रही उपचार सुविधाओं पर सचित्र प्रजेन्टेशन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के पांच प्रकाशनों का विमोचन किया। इनमें राजुवास के न्यूज लैटर और पशुपालन नए आयाम के नवीन अंकों तथा श्वानों में हिड़किया रोग और भैंस पालन एवं प्रबंधन की पुस्तिकाओं और द्वितीय सेण्ड्यूज इन्टरनेशनल शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल के पोस्टर का लोकार्पण किया। इस अवसर पर राज्यपाल के विशेषाधिकारी श्री अजयशंकर पाण्डे सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, छात्र, कर्मचारी, पशुपालक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इससे पूर्व राज्यपाल ने वर्षा जल संग्रहण तंत्र से सिंचाई कार्य का बटन दबाकर शुभांरभ करके इसे बहुत बड़ा कार्य बताया। विश्वविद्यालय मुख्य परिसर के 60 हजार वर्ग मीटर क्षेत्रफल में वर्षा जल को एकत्रित करके रीचार्ज व्यवस्था से वर्षा जल का संरक्षण तंत्र विकसित किया गया है। उन्होंने सजीव पशु जैव विविधता म्यूजियम में रखे गये पशु–पक्षियों के बारे में कुलपति प्रो. गहलोत से पूरी जानकारी प्राप्त की। इसका उद्देश्य पशुपालकों को जैव विविधिकरण के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करना है जिससे वे अपनी आय में वृद्धि कर सकें। सजीव म्यूजियम में मुर्गी, बतख, खरगोश और मछली पालन के साथ–साथ एमू, जापानी बटेर, टर्की का भी पालन किया जा रहा है।

सरकार के दो वर्ष : राज्य प्रदर्शनी में राजुवास शामिल हजारों दर्शकों के समक्ष पशुपालन तकनीकों का प्रदर्शन

राज्य सरकार के दो वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में राज्यस्तरीय प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा दो वर्ष में अर्जित उपलब्धियों और विकास कार्यों को सजीव मॉडल, रंगीन चार्ट–पैनल, छायाचित्रों, सजीव पशुधन उत्पाद और पशुचिकित्सा की विभिन्न तकनीकों का सैंकड़ों दर्शकों ने

अवलोकन किया। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 13 दिसम्बर, 2015 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। एस.एम.एस. इन्वेस्टमेन्ट ग्राऊंड, जयपुर में राज्य के 4 दर्जन विभागों एवं संस्थानों ने 4 दिवसीय प्रदर्शनी में शिरकत की। राजुवास की प्रदर्शनी को कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, परिवहन मंत्री श्री युनूस खान, गौपालन मंत्री देवाराम ओटासी, श्रम राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी, महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री अनीता भदेल, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्री हेम सिंह भड़ाना सहित सैकडों जन प्रतिनिधियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर पशुपालन तकनीक की जानकारी प्राप्त की। मुख्य सचिव सी.एस. राजन सहित राज्य के प्रमुख शासन सचिवों, ओ.पी. सैनी, सुदर्शन सेठी, पी.के. गोयल, जे.सी मोहन्ती, आर. वैंकटेश्वरन, भास्कर सावंत, मुख्यमंत्री के सचिव तन्मयकुमार, मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी ओ.पी सहारण एवं गजानंद शर्मा, सूचना जन सम्पर्क विभाग के निदेशक अनिल गुप्ता सहित अन्य प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों ने पशुपालन के क्षेत्र में राजुवास द्वारा किए जा रहे कार्यों और तकनीक की विस्तृत जानकारी ली। प्रदर्शनी में पशुपालन में अनुसंधान और स्वदेशी गौवंश की नस्ल सुधार और संवर्द्धन के कार्यों को प्रमुखता से

प्रदर्शित किया गया। पशुओं में ऑक्सीटोक्सिन के दुष्प्रभावों, पोलिथीन से होने वाले पशुओं के नुकसान को रंगीन चार्टों के माध्यम से जनमानस के सामने रखा गया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के हित में प्रकाशित साहित्य और मुद्रित सामग्री की भी वितरण बड़े पैमाने पर किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मृदा दिवस व किसान सम्मेलन का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा ग्राम परलीका में अन्तर्राष्ट्रीय मृदा दिवस एवं किसान सम्मेलन का आयोजन 5 दिसम्बर को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नोहर विधायक श्री अभिषेक मटोरिया ने केन्द्र एवं राज्य की योजनाओं के माध्यम से मृदा जांच का महत्व बताते हुए कहा कि प्रत्येक किसान को अपने खेत की मिट्टी की जांच करवानी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने करते हुए किसानों को विश्वविद्यालय की शिक्षा, अनुसंधान व प्रसार से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि नोहर पंचायत समिति प्रधान श्री अमर सिंह पूनिया ने केन्द्र की गतिविधियों की सराहना की। सरपंच श्री जैमल ने परलीका एवं रामगढ़ गांव को केन्द्र द्वारा गोद लिए जाने पर आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में 300 से अधिक किसानों ने शिरकत की। इस अवसर पर परलीका एवं रामगढ़ के किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी वितरित किये गये। कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. नवीन सैनी एवं अक्षय घिंटाला लिखित "चने की खेती" एवं "रबी चारा फसलों की खेती" पुस्तिकाओं का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। उपनिदेशक उद्यानिकी (हनुमानगढ़) बलवीर खाती ने सम्मेलन में फसल एवं मृदा सम्बंधी तकनीकी जानकारी दी। सम्मेलन में जयकिशन बेनीवाल (सोसाइटी चेयरमैन), जुगलाल (जल प्रबंध चेयरमैन), गौशाला अध्यक्ष लक्ष्मण खर्रा, पशु अनुसंधान केन्द्र, नोहर से डॉ. मनोहर लाल सेन, डॉ. सुभाष बाबल, डॉ. अदरीश आदि उपस्थित थे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

चूरू जिले में पशु स्वास्थ्य शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 9, 11, 16, 17, 28, 29 एवं 30 दिसम्बर को गांव देपालसर, खंडवापटा, सहला, लाखाउ खींवसर, चलकोई, कोखाटताम में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं पशुस्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 191 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ (गंगानगर) द्वारा 5 एवं 19 दिसम्बर को वीयूटीआरसी परिसर में तथा 17 एवं 21 दिसम्बर को ग्राम अमरपुरा जाटान एवं भगवानसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 128 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, टोंक द्वारा 147 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी टोंक द्वारा 10, 11, 15, 16, 17 एवं 18 दिसम्बर, 2015 को टोंक जिले के गांव गहलोद, ढांढ़ीयां, वजीरपुराकला, देवपुरा, नटवाडा एवं खलीलाबाद में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। शिविरों में 147 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में तथा 9, 26, एवं 29 दिसम्बर को जैसलान, दताऊ एवं धावा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविरों में 198 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही जिले में 45 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8 एवं 12 दिसम्बर को गांव गोयली तथा मासरोड़ा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 58 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 19 एवं 29 दिसम्बर को सुरोता तथा जनुथर गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 17, 23 एवं 26 दिसम्बर को गांव किसनपुरा, भाड़ाहेडा, जाखोड़ा एवं राजपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर जिले में पशुपालन शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 17 एवं 23 दिसम्बर को गांव बिंजरवाड़ा एवं मण्डावरिया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 5, 16 एवं 18 दिसम्बर को उडपुरा की ढ़ाणी, वीयूटीआरसी परिसर एवं कठांरिया गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविरों में 82 पशुपालकों ने भाग लिया।

आपातकाल में छोटे पशुओं का प्राथमिक उपचार कैसे करें

आपातकाल की अवस्था में कम से कम समय में तुरंत तथा सही निर्णय द्वारा ही पशु को बचाया जा सकता है। आपातकाल के कुछ उदाहरण हैं–

❖**विषाक्तता :–** जो विष मनुष्यों के लिए घातक होते हैं, वो पालतू पशुओं के लिए भी घातक होते हैं जैसे कि सफाई में काम में आने वाले पदार्थ, फिनाईल, चूहे मारने की दवा इत्यादि। यदि पशु ने किसी भी तरह के विषैले पदार्थ का सेवन कर लिया है, तो पशुपालक को बिना समय गंवायें किसी भी प्रकार से विष को बाहर निकालने का (उल्टी इत्यादि द्वारा) प्रयास करना चाहिए। पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें और इस बात का ध्यान रखें कि वो विषैला पदार्थ पशु ने कब और कितनी मात्रा में खाया है।

❖**हड्डी टूटने पर:–** सावधानी से पशु को साफ–सुथरी एवं समतल जगह पर लिटा लें तथा पशु का मुंह बांध दें, जिससे कि वह किसी को काट ना सके। अगर पशु को किसी भी प्रकार का घाव नहीं हुआ हो तो हड्डी टूटी हुई जगह को खींचकर सही करने की कोशिश करें, तथा पशु चिकित्सक के आने तक उस जगह पर खपच्ची या पट्टी बांध दें, परन्तु यदि घाव है तो पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार ही कार्य करें।

❖**बाहरी चोट लगने पर:–** घाव वाली जगह पर साफ पट्टी को दवाब के साथ रखें व तब तक रखें जब तक खून का थक्का न बनने लग जाये। यदि रक्त स्त्राव बहुत ज्यादा हो रहा हो तो रक्त बंद का इस्तेमाल करें।

❖**जल जाने पर:–** जली हुई जगह पर तुरन्त बर्फ के पानी का इस्तेमाल करें तथा साफ करके तुरन्त एंटीसेप्टिक मलहम लगाना चाहिये।

❖**गले में रूकावट/जाम होने पर:–** इससे पशु में श्वांस लेने में तकलीफ, मुंह की तरफ ज्यादा पंजे मारना, श्वांस लेते समय या खांसते समय कुछ गले में फसने/अवरूद्ध होने की आवाज आना प्रमुख हैं। सबसे पहले पशु के मुंह के अन्दर देखें कि क्या कोई बाहरी वस्तु फंसी हुई तो नहीं है, अगर है तो बड़ी ही सावधानी से उसे चिमटी से हटाने का प्रयास करें, यदि बाहरी पदार्थ नहीं हटाया जा सके तो अपने दोनों हाथों को पालतू पशु की पसलियों पर रखें व दबाव डालें।

❖**तापघात (लू लगना):–** गर्म दिनों में कभी भी पालतू पशु को खुला ना छोड़ें। पशु बड़ी आसानी से तापघात का शिकार हो जाते हैं व उन्हें तुरन्त उपचार की आवश्यकता होती है। तापघात का शिकार होने पर पालतू पशु को तुरन्त छायादार स्थान पर ले जायें व उसे प्रत्यक्ष सूर्य की रौशनी से बचायें। पालतू पशु की गर्दन के पास व सिर पर ठंडा व भीगा हुआ कपड़ा रखें। पालतू पशु के ऊपर बहता हुआ जल डालें (विशेषतया पेट के ऊपर) व हाथों से पशु के पैरों की मालिश भी करें।

❖**आघात/सदमा:–** इससे पशु की नब्ज कमजोर, श्वास सुस्त व आंखें स्तब्ध हो जाती है। यह सामान्यतया तीव्र चोट या अत्यधिक भय से होता है। पालतू पशु को नियंत्रित, शांत व गर्म रखें। यदि पशु बेहोश हो जाये तो उसका सिर ऊपर की ओर रखें।

❖यदि पालतू पशु श्वांस ना ले रहा हो तो–पालतू पशु की जीभ को ध्यान से पकड़कर बाहर की ओर खीचें, जब तक वो समतल ना हो जाये। पालतू पशु के गले को ध्यान से जांच करें कि कोई बाहरी पदार्थ ना अटका हुआ हो।

डॉ. अभिमन्यु सिहाग, डॉ. नजीर मोहम्मद एवं
प्रो.(डॉ.) ए.के.कटारिया, अपेक्स सेंटर, राजुवास, बीकानेर

अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें

गिर गौ नस्ल –गौरव प्रदेश का

गिर नस्ल की गायों का मूल आवास गुजरात के अमरेली, भावनगर, जूनागढ़ तथा राजकोट जिले हैं। इस नस्ल के पशु महाराष्ट्र और सीमावर्ती राजस्थान के इलाकों में भी पाये जाते हैं। इसको अन्य नामों जैसे गुजराती, काठियावाड़ी, सूरती आदि से भी जाना जाता है। इस नस्ल के पशुओं का माथा उभरा, चौड़ा तथा लंबा होता है तथा कान पत्ती की तरह घुमावदार व हर समय आगे की ओर लटकते हुए रहते हैं। इनका रंग मुख्यतया गहरा लाल या सफेद के साथ गहरा लाल पाया जाता है। इसके सींगों की बनावट अर्द्ध चंद्राकार होने का आभास देती है। गिर गायें अपनी दुधारू क्षमता के लिए जानी जाती है व एक ब्यांत में लगभग 2100 लीटर तक दूध उत्पादन दे देती हैं। इनका प्रथम ब्यांत अंतराल लगभग 480 दिन का होता है। दूध में वसा की मात्रा 4.6 प्रतिशत होती है जो कि संकर तथा विदेशी गायों से अधिक है। गिर नस्ल के पशुओं का प्रजनन व्यावसायिक पशुपालक समुदाय जैसे रेबारी, भानोड़, अहीर, चारण तथा मलधारी द्वारा किया जाता है। गिर नस्ल के पशु अपने उच्च ताप व तनाव सहने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं, साथ ही इसमें अनेक ऊष्ण रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधकता पाई जाती है। इसकी इन विशेषताओं को देखते हुए अनेक देशों जैसे ब्राजील, संयुक्त राज्य अमेरिका, मैक्सिको, वेनेजुएला ने इनका बड़ी संख्या में आयात किया है। इस नस्ल का महत्व हमारी अर्थव्यवस्था में देखते हुए भारत सरकार ने सन् 1945 में गिर नस्ल के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु झुण्ड पुस्तिका में शामिल किया जिसमें पंजीकृत होने के लिए पशु का 300 दिवस में 1100 कि.ग्रा. न्यूनतम दुग्ध स्त्रावण आवश्यक है।

गिर देशी गौवंश के उन्नयन एवं संवर्द्धन का कार्य विश्वविद्यालय के वल्लभनगर (उदयपुर) स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर किया जा रहा है। वर्तमान में वल्लभनगर केन्द्र पर 193 देशी गिर गौवंश का पालन किया जा रहा है तथा यहां से क्षेत्र में पशुपालकों को श्रेष्ठ नस्ल का हिमकृत वीर्य कृत्रिम गर्भाधान के लिए वितरित किया जा रहा है। वर्तमान में फार्म पर उपस्थित गौवंश प्रथम प्रसव काल में है। इनमें दुग्ध उत्पादन बढ़कर 2952 लीटर प्रति ब्यात तक पहुंचा है जो कि राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो के औसत दुग्ध उत्पादन 2100 लीटर प्रति ब्यांत से कहीं अधिक है। फार्म पर प्रतिदिन इस नस्ल से अधिकतम दूध उत्पादन 19 लीटर तक मिला है। केन्द्र द्वारा अब तक 36 उन्नत नस्ल के गिर बछड़े और सांडों को पशुपालकों और गौशालाओं को उपलब्ध करवाये गये हैं।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, (वी.यू.टी.आर.सी.) बाकलिया–लाडनूं

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत की संकल्पना और राजस्थान सरकार के सहयोग से प्रसार शिक्षा निदेशालय के अधीन प्रत्येक जिले में पशुधन प्रशिक्षण व अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना का कार्य शुरू किया गया। राज्य में प्रथम पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना नागौर जिले के लाड़नू तहसील के समीप बाकलिया गांव में की गई। विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित नया भवन इसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। केन्द्र की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य गांवों के प्रत्येक पशुपालक तक पशुपालन की उन्नत तकनीक व पशुचिकित्सा सेवाओं का लाभ पहुंचाना, परामर्श सेवाएं प्रदान करना, वैज्ञानिक पशु प्रबंधन को बढ़ावा देना, स्थानीय पशुपालन संबंधी समस्याओं का निराकरण कर पशुपालकों को उन्नत आय व बेहतर जीवन उपलब्ध करवाना है। केन्द्र ने अपनी स्थापना की दो साल अवधि में 45 कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया। जिनमें 1633 कृषक–पशुपालक लाभान्वित हुए। इनमें से 41 शिविर परिसर से बाहर गांवों में आयोजित किये गये। केन्द्र के वैज्ञानिक पशुपालन विभाग की मोबाइल इकाई और किसान सेवा केन्द्र के साथ जुड़कर भी शिविरों में अपनी सेवांए प्रदान कर रहे हैं। यह केन्द्र विश्वविद्यालय की उन्नत व नवीनतम तकनीकों से सुसज्जित है। केन्द्र परिसर में आधुनिक प्रयोगशाला, व्याख्यान कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, कम्प्यूटर युक्त कार्यालय व मीटिंग हॉल हैं। व्याख्यान कक्ष, स्मार्ट कक्षा शिक्षण की नवीन तकनीक (स्मार्ट बोर्ड, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर) से सुसज्जित है। केन्द्र पर इंटरनेट, कम्प्यूटर, आधुनिक प्रयोगशाला परीक्षणों के लिए वैज्ञानिक उपकरणों की सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग शोध, पशु–नमूनों के परीक्षण व पशुपालकों के प्रशिक्षण हेतु किया जाता है। पशुपालकों का डेटाबेस बनाकर परामर्श सेवाएं विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जा रही है। पशुपालकों को वैज्ञानिक साहित्य व पत्र–पत्रिकाएं वितरित किए जाते हैं। पशुपालकों में वैज्ञानिक पशुपालन, पशु नस्ल सुधार व पशु प्रबंधन हेतु चेतना जागृत करना, पशुपालन संबधी समस्याओं के समाधान तथा पशुपालकों तक उन्नत वैज्ञानिक तकनीक के हस्तांतरण के लिए केन्द्र सतत रूप से कार्यरत है।

पंचगव्य चिकित्सा : प्राचीन विज्ञान का नया रूप

आयुर्वेद में पंचगव्य का मतलब पांच महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं जो गाय से मिलती हैं– दूध, मूत्र, दही, घी और गोबर। हमारे वेदों और शास्त्रों में गाय से प्राप्त उत्पादों का उपयोग बताया गया है इसके अलावा विभिन्न वैज्ञानिकों और शोधार्थियों ने पाया कि गाय के उत्पाद अतिआवश्यक तत्वों जैसे लवणों और हारमोन्स का खजाना है, इन्ही सब कारणों से पंचगव्य प्राचीन काल से ही हमारे समाज में मानव और पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने और इलाज के लिए उपयोग किया जाता रहा है। पंचगव्य चिकित्सा में इन पांच उत्पादों का उपयोग अकेले या अन्य दवाओं जो कि पौधों, जन्तुओं से प्राप्त होती है, के साथ विभिन्न बीमारियों के उपचार में लिया जाता है। वर्तमान में एलोपैथिक दवाओं के विभिन्न कुप्रभावों के कारण पंचगव्य चिकित्सा एक विकल्प के रूप में प्रसिद्धि पा रही है। गाय उत्पादों में सल्फर, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, सोडियम, मेग्नीज, लोहा, सिलिकॉन, कैल्शियम और विभिन्न हारमोन्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पंचगव्य उत्पादों का उपयोग खेती में जैविक खाद और वर्मीकम्पोस्ट के रूप में भी किया जाता है, जिससे जमीन की उर्वरता बढती है। वैज्ञानिकों ने पाया की गोमूत्र अर्क जो कि गाय के मूत्र का आसवन करके उसकी भाप को संग्रहित करके बनाया जाता है, कैंसर के इलाज में अत्यन्त उपयोगी है। इसके उपयोग से कैंसर के इलाज में काम में आने वाली दवाओं की क्षमता में वृद्धि होती है और कैंसर का इलाज कम खर्च और कम समय में किया जा सकता है। इसी के खास उपयोग के कारण अमेरिका ने एक पेटेंट जारी किया है। गोमूत्र एंटी फंगल दवा के रूप में भी उपयोग के कारण अमेरिका ने एक पेटेंट जारी किया है, वैज्ञानिकों ने विभिन्न शोधों से यह भी सिद्ध किया है कि गोमूत्र के उपयोग से विभिन्न इम्युनोग्लोबुलिन्स और इंटरलुकिंस के स्तर भी बढाता है, मुर्गियों में गोमूत्र रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और साथ ही गोमूत्र टीकाकरण के साथ मुर्गियों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करता है। इसके प्रतिदिन उपयोग से मुर्गियों में अंडें की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। गोमूत्र को फुटबाथ के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है। गाय का दूध कम कैलोरी, कम कोलेस्ट्रॉल, अत्यधिक लवणों के कारण अत्यधिक स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, यह कैरोटिन और विटामिन बी का प्रचुर स्त्रोत है इसलिये छोटे जानवरों और बछड़ों के लिये अन्यन्त उपयोगी होता है। गाय के दूध में भैंस के दूध की अपेक्षा प्रोटीन कम होने के कारण गुर्दों के रोगियों में अत्यधिक लाभकारी होता है। गाय के दूध में उपस्थित लेक्टोफेरिस, लेक्टोपेरोक्सिडेज, लाायसोजाइन के कारण एंटीमाइक्रोबिअल प्रभाव भी होता है। कम वसा के कारण गाय का दूध दिल के रोगियों के लिये अत्यंत लाभप्रद होता है, यह आमाशय में अम्लीयता को भी कम करता है। वैज्ञानिकों ने ये भी सिद्ध किया है कि गाय के दूध में विद्यमान लिनोलेनिक एसिड कैंसर की वृद्धि को रोकता है। गाय का दही रक्त शोधक माना जाता है और रक्त और आहारनाल से सम्बन्धित बीमारियों में उपयोगी है। दही एक बहुत गुणकारी प्रोबायोटिक है जो आहारनाल में हानिकारक जीवाणुओं की वृद्धि को रोकता है। दही में प्रचुर मात्रा में लैक्टिक एसिड पैदा करने वाले जीवाणु पाए जाते हैं जो एंटीफंगल मेटाबोलाइट पैदा करते हैं। दही प्राचीन समय से चीनी और जीरा के साथ बछडों में दस्त रोकने और आहारनाल के परजीवियों से छुटकारा पाने के लिये उपयोग किया जाता है। घी भी पारंपरिक रूप से याददास्त, बुद्धि, दृष्टि और रोगप्रतिरोधक क्षमता बढाने के लिये उपयोग किया जाता है, गाय के घी को अगर कुछ हर्बल दवाओं के साथ दिया जाये तो घावों को और त्वचा सम्बन्धी रोगों में अत्यधिक फायदेमंद है। गोबर और नीम की पत्तियों का मिश्रण फुंसियों और जलने में भी उपयोगी होता है। ताजा गोबर मलेरिया और टीबी के रोगाणुओं को नष्ट करता है। वैज्ञानिकों ने ये खोज निकाला है कि गोबर में कुछ ऐसे सूक्ष्मजीवी होते हैं जो ऐसे तत्व पैदा करते हैं जो एंटीफंगल होते हैं। इन्हीं सभी गुणों के कारण पंचगव्य भविष्य में एलोपेथिक दवा के विकल्प के रूप में साबित हो सकता है। इस प्राचीन चिकित्सा को एक नए और वैज्ञानिक रूप में प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है।

डॉ. लक्ष्मी नारायण सांखला,
(9460067057) वेटरनरी कॉलेज,बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊँट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा
एम्फीस्टोमीयेसिस	गाय, भैंस	भरतपुर, उदयपुर, कोटा
फेसियोलियोसिस (यकृत कृमि)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई माधोपुर,
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौड़गढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर,
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर,
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर
चेचक/माता रोग	भेड़, ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, पाली
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर,
एनाप्लाज्मोसिस	गाय	भरतपुर, जयपुर, सीकर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुंझुंनु
जोहनीस रोग	भेड़, गाय	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	बकरी, भेड़	बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, जोधपुर, धौलपुर, अजमेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर । फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

पशुओं में कोल्ड स्ट्रैस का प्रबंधन कैसे करें

दिसम्बर माह के मध्य से जनवरी माह के अन्त तक वातावरण का तापमान प्रदेश में कई स्थानों पर काफी कम हो जाता है। इस समय उत्तरी भारत के पहाड़ी इलाकों में बहुत ज्यादा हिमपात होने की वजह से वातावरण का तापमान सामान्य से भी कम हो रहा है। वातावरण में अत्यधिक तापमान गिरने से पशुधन बहुत अधिक प्रभावित होता है जिसकी वजह से वयस्क पशुओं के उत्पादन में अप्रत्याशित कमी आती है एवं छोटे तथा नवजात बच्चों में शरीर का तापमान कम होने से मृत्यु हो जाती है। इस अवस्था को कोल्ड स्ट्रैस या हाइपोथर्मिया कहते हैं। यदि पशुओं का इस मौसम के दौरान समुचित प्रबंध नहीं किया जाता है, तो पशुपालक को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। कोल्ड स्ट्रैस को पशुपालक आसानी से पहचान सकते हैं। पशु प्रारम्भ में कांपने लगता है, शरीर के बाल खड़े हो जाते हैं, श्लेष्मा झिल्लियां पीली पड़ने लग जाती है, पशु सुस्त हो जाता है, श्वांस व नाडी दर में कमी आती है और कुछ ही समय में पशु की मृत्यु हो जाती है। जिन पशुओं के पोषण में कमी होती है ऐसे पशु कोल्ड स्ट्रैस से शीघ्र प्रभावित होते हैं। पशुपालकों को चाहिए कि अत्यधिक सर्दी के समय पशुओं (विशेष तौर पर छोटे व नवजात) का प्रबंधन अच्छी तरह करें। रात के समय छप्पर के नीचे अथवा पशुघर में रखें। दरवाजे एवं खिड़कियों पर टाट की पल्लियां लगा दें और दिन के समय पशुओं को धूप में रखें। सीधी सर्द हवाओं से पशु का बचाव करें। यदि सम्भव हो तो पशु को पीने का पानी गुनगुना करके देवें। इसके साथ ही पशुपालक यह ध्यान रखें कि सर्दी से बचाव के लिए घर के अन्दर आग न जलायें एवं धुंआ न करें। धुंआ से पशुओं में न्यूमोनिया होने का खतरा बढ़ जाता है। बड़े पशुओं को संतुलित आहार एवं लवण–मिश्रण दें एवं नवजात बच्चों को पर्याप्त मात्रा में खीस पिलायें। यदि पशु में कोल्ड स्ट्रैस के लक्षण देखें तो पशु को गर्म स्थान पर बांधकर शरीर पर मालिश करने से शरीर का तापमान सामान्य किया जा सकता है। साथ ही पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क कर अपने पशुओं की जान बचायें ।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सफलता की कहानी

प्रशिक्षण और पशुपालन ज्ञान के उपयोग से निहाल हुआ राजेन्द्र

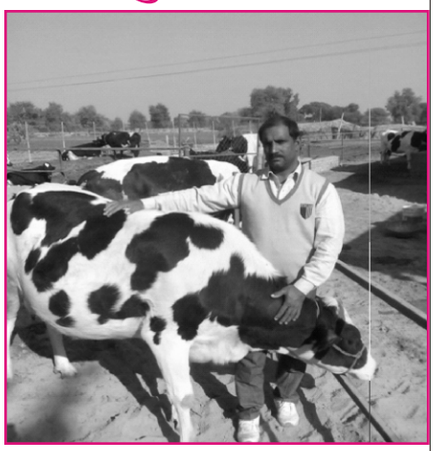

श्रीगंगानगर जिले के गांव गणेशगढ़ के प्रगतिशील पशुपालक राजेन्द्र कुमार पशुपालन एवं कृषि के प्रति काफी सजग है। राजेन्द्र कुमार एक साधारण किसान परिवार से संबंध रखते हैं। 10 वर्ष पूर्व इन्होने पशुपालन को आजीविका के साधन के रूप में अपनाया एवं डेयरी व्यवसाय को शुरू करने की सोची, इसके लिए वे पंजाब राज्य से 5 गायें खरीद लाये जो उत्पादन में अच्छी थी। दुग्ध उत्पादन के साथ–साथ अन्य उत्पादों का भी भरपूर उपयोग करने लगे। समय व्यतीत होता गया तथा राजेन्द्र कुमार ने दृढ़ निश्चय रखा तथा पशुपालन से जुड़े रहे। आज इनके पास 40 गायें हैं। ये डेयरी से इतने साधन सम्पन्न हैं कि डेयरी में वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने के लिए पूंजी खर्च कर रहे हैं। इन्होंनें गायों के लिए पक्का शेड बना रखा है तथा उम्र के अनुरूप गायों को अलग–अलग शेड में रखते हैं। दुग्ध दोहन के लिए मशीनों का उपयोग करते है। समय समय पर पशुपालन के लिए जानकारी एवं नवीन तकनीकों के बारे में जानने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ पर प्रशिक्षण लेते है तथा इसके अतिरिक्त दूरभाष के द्वारा भी विशेषज्ञों से लगातार जानकारी प्राप्त करते रहते हैं। राजेन्द्र कुमार के अनुसार प्रशिक्षण से उन्हें काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण में टीकाकरण, कृमिनाशी दवाओं व खनिज लवण का उपयोग, हरे चारे का आचार, अजोला उत्पादन की जानकारी प्राप्त की है तथा इसका उपयोग करने से पशुओं के उत्पादन में वृद्धि प्राप्त की है। राजेन्द्र कुमार पशुपालन की वैज्ञानिक जानकारियां अन्य ग्रामीणों एवं डेयरी व्यवसायियों के साथ भी बाँटते हैं। वे पशुपालन में इतने सक्षम हो चुके हैं कि अपने स्तर पर ही टीकाकरण, प्राथमिक उपचार एवं कृत्रिम गर्भाधान कार्य करने लगे हैं। वे इस सफलता का पूरा श्रेय अपने परिवार एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ को देते हैं।

राजेन्द्र कुमार, गणेशगढ़, श्रीगंगानगर (मो.:8441997703)

निदेशक की कलम से...

नव वर्ष में नया करने का संकल्प लेना होगा

प्रिय कृषक एवं पशुपालक भाईयों !

नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। वर्ष 2015 बीत गया लेकिन आओ हम इसका सिंहावलोकन करके आगे के नए वर्ष में कुछ नया करने का संकल्प लें। हमारे राज्य में विपरीत जलवायु परिस्थितियों में भी पशुधन ने हमेशा हमारा साथ दिया है। यह हमारी रोजी–रोटी का जरिया बना है। प्रदेश की खुशहाली में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान हैं। हमारा देशी गौवंश, भेड़–बकरी व ऊँट हमारी धरोहर है। देशी गौवंश से दूध उत्पादन करने में हम पहले स्थान पर है जो हमारे लिए गौरव की बात है। वर्षा आधारित खेती के कारण कृषि उत्पादन में अनिश्चितता बनी रहती है। ऐसे में पशुधन पूरी तरह हमारा साथ देता रहा है। प्रदेश के हर क्षेत्र में देशी गौवंश की श्रेष्ठ नस्लें मौजूद है। हम नए वर्ष में अपने पशुधन से दुग्ध उत्पादकता बढ़ाने का संकल्प लेवें। वेटरनरी विश्वविद्यालय इस कार्य में आपकी मदद के लिए पूरी तरह तैयार है। विश्वविद्यालय के 8 पशु अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदेश की विभिन्न श्रेष्ठ देशी गौवंशों के वैज्ञानिक लालन–पालन से दुग्ध उत्पादन में बढ़ौतरी दर्ज की गई है। दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिए देशी गौवंश की देशी नस्ल में सुधार, प्रजनन और पोषण की अनेकों नई तकनीकें तैयार की हैं जिनका उपयोग कर आप अपने पशुधन से बढ़ा हुआ दुग्ध उत्पादन ले सकते हैं। राज्य के देशी गौवंश में दुग्ध उत्पादन की क्षमताएं मौजूद हैं जिसका अच्छे पोषण और प्रबंधकीय उपायों से पूरा दोहन किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर बिना किसी जीन परिवर्तन के राठी, कांकरेज, थारपारकर और साहीवाल गौ नस्लों की संततियों से उच्च गुणवत्ता के पशुपोषण और प्रबंधन उपायों से 18 से 25 लीटर तक दूध प्रतिदिन संकलित करने में सफलता अर्जित की है। अपनी पशु संपदा के उचित खान–पान, रहन और प्रजनन संबंधी वैज्ञानिक जानकारी रखकर अधिक दूध उत्पादन लिया जा सकता है। हम नए वर्ष में संकल्प लेकर कार्य करेंगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** प्रसार शिक्षा निदेशक (मो0 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जनवरी 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो.(डॉ.) कर्नल ए.के.गहलोत,** 9414138211 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	वेटरनरी विश्वविद्यालय किसानों व पशुपालकों की सेवा में अग्रसर	07.01.2016
2	**प्रो. राजेश कुमार धूड़िया** 9414283388 निदेशक, प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	सन्तुलित पशु आहार : अधिक उत्पादन का आधार	14.01.2016
3	**डॉ. मनीषा मेहरा** 7615003830 पशु व्याधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं से मनुष्यों में होने वाली बीमारियां एवं उनका निदान	21.01.2016
4	**प्रो. डी.के.बिहाणी** 9829513610 पशु औषधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	सर्दियों में गायों एवं भेड़–बकरियों में होने वाले मुख्य रोग एवं बचाव	28.01.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : जनवरी, 2016

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया